International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 11, Issue 8, August 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका और उनकी दैनिक जीवन की समस्याएं

Ranjana Ajabrao Nakshine
Research Scholar Shri JJT University
Dr. Savita Sangwan
Associate Professor Department of Humanities & Social Sciences
Research Supervisor Shri JJT University, Jhunjhunu, Rajasthan

सार

कामकाजी महिलाओं को घर और बाहर दोनों जिम्मेदारियों का निर्वाह करना पड़ता है। प्रायः देखा जाता है कि पति और उसके परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग सहज रूप में नहीं मिल पाता। पति भी अमानवीय व्यबहार करने से बाज नहीं आते। ऐसी स्थिति में मनोबल टूटना स्वाभाविक है। यहां तक कि दाम्पत्य संबंध में भी कटुता आ जाती है। इस दोहरी भूमिका में कामकाजी महिलाओं कों मानसिक तनाओं से होकर गुजरना पड़ता हैं बाहर का काम, फिर धर का काम, बैलों की तरह जुतना हो जाता है। बदलते वक्त ने महिलाओं को आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया है और उनकी हैसियत एवं सम्मान में वृद्धि हुई है। इसके बावजूद अगर कुछ नहीं बदला तो वह है महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारी। खाना बनाना और बच्चों की देखभाल अभी भी महिलाओं का ही काम माना जाता है। कई महिलाएं घर और ऑफिस के बीच सामंजस्य बिठाने में दिक्कत महसूस करती है और बाद में नौकरी छोड़ देती हैं।

कीवर्ड– महिला, कामकाजी, नौकरी, परिवार, घरेलू,

1.1 प्रस्तावना

वर्तमान समय में महिलाओं का कामकाजी होना राष्ट के हित में काफी महत्वपूर्ण है, पर इस मर्दवादी समाज में स्त्री की हैसियत पर आज भी उंगली उठती है। कामकाजी महिलाएं नौकरी करते हुए भी आर्थिक रूप से मिलने वाली तनख्वाह पर पति और घरवालों की नजरें लगी रहती हैं। निर्ममता से हिसाब मांगा जाता है। अतः, आर्थिक स्वतंत्रता की बात बेमानी लगती है। इतना ही नहीं उसे दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। ''स्त्री की अपनी प्राकृतिक विषेषताएं हैं, परन्तु दोहरे मानदंडों ने जो षर्मनाक स्थिति पैदा की है,वे स्त्री को मात्र'स्त्रीत्व' के बंघनों में बांघते हैं।''

कामकाजी महिलाओं को घर और बाहर दोनों जिम्मेदारियों का निर्वाह करना पड़ता है। प्रायः देखा जाता है कि पति और उसके परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग सहज रूप में नहीं मिल पाता। पति भी अमानवीय व्यबहार करने से बाज नहीं आते। ऐसी स्थिति में मनोबल टूटना स्वाभाविक है। यहां तक कि दाम्पत्य संबंध में भी कटुता आ जाती है। नोंक झोंक आम बात हो जाती है। इस दोहरी भूमिका में कामकाजी महिलाओं कों मानसिक तनाओं से होकर गुजरना पड़ता हैं बाहर का काम, फिर धर का काम, बैलों की तरह जुतना हो जाता है। स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं की समस्याएं आम महिलाओं की अपेक्षा अधिक हैं– खासकर पुरूषों के साथ टकराहट बनी रहती है,''स्त्री –पुरूष विषमता को भारत की सबसे बड़ी व गंभीर सामाजिक विफलता मानने वाले अर्थषास्त्री डॉ0 अमर्त्यसेन की स्पष्ट निष्पत्ति है कि स्त्री –मुक्ति और स्त्री –सषक्तिकरण केवल नारीवादी मुद्दा नहीं है,वल्कि वह सामाजिक प्रगति का एक अभिन्न अंग है।'' महिलाएं नौकरी करते हुए भी गुलामी सहती है। वे अपने कमाये पैसे इच्छानुसार खर्चनहीं कर सकतीं। उसकी विडंबना यह भी है कि अपने बारे में कोई निर्णय नहीं ले सकतीं। निर्णय नौकरी का हो या विवाह का, अथवा किसी कार्य का हेा वह स्वधीन नहीं

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

है। माता–पिता यदि नौकरी करा भी देते हैं तो विवाहोपरांत ससुराल वालों की इच्छा पर निर्भर हे कि वह नौकरी करने दे अथवा नहीं।''संरचनात्मक परिवर्तन द्वारा ही पुरूष पौरूषीय दुराग्रह से मुक्त किया जा सकता है। अगर स्त्रियां खुद को मुक्त कर लेती हैं तो अपने दमनकर्तओं को भी मुक्त करा लेंगी।''

1.1 महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण एक आंदोलन है। जिसमें सभी महिलाओं के प्रति सम्मान और मान्यता सामिल है। सशक्तिकरण को कई तरह से परिभाषित किया जा सकता है, हालांकि जब महिला सशक्तिकरण के बारे में बात होती है तो, सशक्तिकरण का मतलब उन लोगों को स्वीकार करना है और उन्हे अनुमति देना है जो निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर है। यह राजनीतिक संरचनाओं और औपचारिक निर्णय लेने में भागीदारी पर और आर्थिक क्षेत्र में एक आय प्राप्त करने की क्षमता पर एक मजबूत जोर देता है। जो आर्थिक निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जो व्यक्तियों को अपने जीवन, समाज और समुदायों में शक्ति का निर्माण करती है। सशक्तिकरण की जरूरत तब पड़ती है जब समाज का कोई समुदाय निर्णय लेने की प्रक्रिया में, अपने अधिकारों का इस्तेमाल में और अन्य सुविधाओं को प्राप्त करने में सक्षम न हो। अपने निर्णय लेने का हक महसूस से सशक्तिकरण की भावना पैदा होती है। सशक्तिकरण में शिक्षा के माध्यम से महिलाओं की स्थिति सुधारने, जागरूकता बढ़ाने, साक्षरता और परिक्षण शामिल किया जाता है। महिला सशक्तिकरण महिलाओं को समाज में फैली कुरीतियों का विरोध करने, अपने अधिकारों को हासिल करने के प्रति जागरूक बनाता है। 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष कहा जाता है। देश के सतत् विकास को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं का सशक्त होना नितांत आवश्यक है। लैंगिक समानता महिला सशक्तिकरण का मुख्य अंग है।

विद्वानों ने तर्क दिया है कि लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के बिना सत्त विकास असम्भव है। सत्त विकास पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक और आर्थिक विकास को स्वीकार करता है। यह माना जाता है कि समाज के सम्पूर्ण विकास के लिए महिलाओं और पुरुषों की बराबर की भागीदारी महत्त्वपूर्ण है। केवल पुरुषों की भागीदारी को स्वीकार करना टिकाऊ विकास के लिए फायदेमंद नहीं होगा। सशक्तिकरण की प्रक्रिया में समाज को पारंपारिक मान्यताओं को छोड़कर नए विचारों के साथ आगे बढ़ना होता है। महिला सशक्तिकरण, भौतिक या आध्यात्मिक, शारीरिक या मानसिक सभी स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है। महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएं शक्तिशाली बनती है जिससे वह अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना है महिला सशक्तिकरण है। इसमें ऐसी ताकत है कि वह समाज और देश में बहुत कुछ बदल सके। वह समाज में किसी समस्या को पुरुषों से बेहतर ढंग से निपटा सकता है। महिलाओं को विकास की मुख्यधारा में शामिल करना ही महिला सशक्तिकरण है। भारत की आधी आबादी महिलाओं की है और विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार अगर महिला श्रम में योगदान दे तो भारत की विकास पर दहाई की संख्या में होगी। फिर भी दुर्भाग्य की बात है कि केवल कुछ लोग ही महिला रोजगार के बारे में उपरोक्त वही बात करते है जबकि अधिकतर लोगों को युवाओं के बेरोजगार होने की ज्यादा चिंता है। हाल में ही प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद की पहली बैठक में 10 ऐसे प्रमुख क्षेत्रों को चिन्हित किया गया है, जहाँ ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। दुर्भाग्य की बात यह है कि महिलाओं का श्रम जनसंख्या में योगदान तेजी से कम हुआ है। यह लगातार चिंता का विषय बना हुआ है। लेकिन फिर भी महिला रोजगार को अलग श्रेणी में नहीं रखा गया है।

नेशनल सैम्पल सर्वे के अनुसार 2011–12 में महिला सहभागीता दर 25.51 थी जो कि ग्रामीण क्षेत्र 24.8 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र में मात्र 14.7 प्रतिशत थी। जब रोजगारों की कमी है तो महिलाओं के लिए पुरुषों के समान कार्य अवसरों की उम्मीद कैसे कर सकते है? एक पुरुष ज्यादा समय तक कार्य कर सकता है उसे मातृत्व अवकाश की जरूरत नहीं होती है और कहीं भी यात्रा करना उसके लिए आसान होता है। निर्माण कार्यो में महिलाओं के लिए पालना घर या शिशुओं के लिए पालन की सुविधा मुहैया कराना जरूरी होता है। ऐसे कई कारण है जिनसे भारत में महिला श्रमिक सहभागीता में कमी आई है और यह दर दक्षिण एशिया में पाकिस्तान के बाद सबसे कम है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद (ळक्ब) में महिलाएं मात्र 17 प्रतिशत का योगदान दे रही है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार क्रिसटीन लिगार्डे का कहना है कि ज्यादा से ज्यादा महिलाएं अगर श्रम में भागीदारी करे तो भारत की तक बढ़ सकती है। महिलाएं देश की आधी आबादी है उनके सम्पूर्ण विकास

और देश के सम्पूर्ण विकास के लिए हमें देश की आधी आबादी को सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाना होगा ताकि देश के विकास में महिलाएं भी अपनी भागीदारी दर्ज करा सकें। यद्यपि भारत सरकार इस दिशा में काफी कदम उठा रही है।

2. सम्बंधित साहित्य

खटरेजा, कंचन. (2023) आधुनिक समाज में महिलाएँ प्रमुख पदों पर आसीन हैं और महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती हैं, चाहे वे कार्यरत हों या नहीं। हालाँकि, आज की कामकाजी महिलाओं को अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के दायित्वों को निभाना पड़ता है। पेशेवर दबाव और पारिवारिक दायित्वों के कारण, उन्हें काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाने में कठिनाई होती है। परिणामस्वरूप, काम और जीवन के बीच संतुलन बनाना कामकाजी महिलाओं के लिए कई चुनौतियाँ पेश करता है। ''कार्य–जीवन संतुलन'' की धारणा में नौकरी से संबंधित तनाव को कम करना और अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखते हुए एक सुरक्षित और टिकाऊ कार्य वातावरण बनाना शामिल है। कार्य–जीवन संतुलन की कमी के परिणामस्वरूप तनाव, बीमारी और खराब प्रदर्शन हो सकता है।

कुमारेशन, लक्ष्मण और मैरी, शिल्पा. (2023) इस अध्ययन का लक्ष्य बीमा उद्योग में महिला श्रमिकों के कार्य–पारिवारिक संघर्षों को प्रभावित करने वाले कारकों की जांच करना है। बीमा उद्योग में, महिला श्रमिकों का एक अध्ययन बेंगलुरु पर जोर देते हुए किया गया था। कार्य–पारिवारिक विवादों के बीच घर्षण को कम करने के लिए, पेशेवर कार्य और अन्य गतिविधियों के बीच संतुलन हासिल करना कार्य–परिवार संघर्ष के पूर्वानुमानकर्ताओं में से एक है। कार्य–जीवन संतुलन उत्पादकता में सुधार करता है क्योंकि यह प्रभावशीलता को बढ़ाता है। यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में संतुष्टि के स्तर को बढ़ाता है। किसी भी संगठन की समग्र सफलता उसके कर्मियों के प्रदर्शन पर आधारित होती है, जो बदले में विभिन्न प्रकार के चर पर आधारित होती है।

काओ, चेन्यू और डुआन, हुई और एनजी, ली. (2023) शिक्षा में लैंगिक रूढ़िवादिता के पीछे के सिद्धांत के अनुसार, उच्च शिक्षा के स्तर पर पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता कार्यस्थल में लड़कियों के करियर के विकास को आंशिक रूप से सीमित करती है। यह निबंध इस बात पर कई शोध प्रस्तुत करता है कि उच्च शिक्षा में मौजूद लैंगिक अंतर के आलोक में महिलाएं अपने करियर को कैसे आगे बढ़ाएंगी। यह उच्च शिक्षा में महिलाओं की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करता है और प्रासंगिक साहित्य और आंकड़ों का मूल्यांकन करके यह उन पर कैसे प्रभाव डालता है। महिलाओं की शैक्षिक अपेक्षाओं की आवश्यकताएं, महिलाओं के रोजगार पर प्रभाव, उच्च शिक्षा की शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से लैंगिक असमानता के बारे में जागरूकता, और कॉलेजों में लैंगिक समानता शिक्षा की वर्तमान स्थिति पर एक विश्लेषण और सिफारिशें इस अनुच्छेद में खोजी जाएंगी।

मार्केस–पेरलेस, इल्डेफोन्सो और मिगुएल, जुआन. (2023) यह लेख एक ऐसे विषय पर चर्चा करता है जिस पर सामाजिक गतिशीलता पर साहित्य में पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया हैः महिलाएं सामाजिक लाभ और जीवन के अवसरों के प्रसार में कैसे योगदान देती हैं। उन लोगों के लिए जो 1926 और 1976 के बीच स्पेन में पैदा हुए थे, हमारे मॉडल में दोनों पूर्वज शामिल हैं। हमने इस देश को हाल के दशकों में महिला आबादी के लिए प्रजनन दर, श्रम बाजार और शैक्षिक गतिशीलता में हुए व्यापक बदलावों के कारण चुना है। पहले के शोध के विपरीत, हम अधिक खुले समाज की ओर एक निश्चित बदलाव के बजाय लिंग आधारित उतार–चढ़ाव पाते हैं। बेटों की सामाजिक तरलता पूरे समय एक समान रही है, जबकि बेटियों की सामाजिक तरलता में काफी वृद्धि हुई है।

बी, नाहिद. (2023) भारत में कामकाजी महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव सार ''वैश्वीकरण'' के रूप में जानी जाने वाली प्रक्रिया में अर्थव्यवस्थाओं और समाजों की परस्पर निर्भरता, कनेक्टिविटी और एकीकरण को इस हद तक विस्तारित करना शामिल है कि दुनिया के एक क्षेत्र में होने वाली घटना का प्रभाव दुनिया के अन्य क्षेत्रों के व्यक्तियों पर पड़ता है। दुनिया। वैश्विक संस्कृति और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण ऐसी अवधारणाएँ हैं जिनके बारे में हम अक्सर सुनते हैं। भारत में, कामकाजी महिलाओं की भूमिकाएँ विकसित हो रही हैं, और वे अब पुराने प्रतिबंधों से बाहर निकलकर स्वतंत्रता और अधिकारों के एक नए युग में प्रवेश कर

रही हैं। इस निबंध का मुख्य लक्ष्य यह जांच करना है कि वैश्वीकरण ने भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति को कैसे बदल दिया है।

3. कामकाजी महिलाएँ दोहरी भूमिका कितनी सफलता पूर्वक निभाती है

अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि नौकरी पेशा महिलाएँ चाहे आर्थिक कारणों से नौकरी कर रही हो या स्वयं की इच्छा से, किन्तु अधिकांश महिलाएँ कर्मचारी एवं व्यवसाय की भूमिका निर्वाह में किन्हीं कारणों से कहीं न कहीं भूमिका संघर्ष अनुभव करती है किन्तु फिर भी सभी महिलाएँ पारिवारिक एवं व्यावसायिक सामंजस्य बनाये हुए हैं एवं इनके दाम्पत्य सम्बन्धों पर प्रभाव नहीं पाते हैं क्योंकि ये सभी महिलाएँ पति की सहमति से ही नौकरी करती है। अतः हम नौकरी एवं दाम्पत्य सम्बन्ध में कार्य–कारण के संबंध का अभाव पाते हैं। इस सामंजस्य का एक कारण यह भी था कि ये महिलाएँ स्वयं की इच्छा से नौकरी करती थी; दबाव स्वरूप नहीं। कुछ महिलाओं पर आर्थिक दबाव पाते हैं। अतः नौकरी के प्रति द्वेधवृत्ति के कारण इनमें भूमिका द्वन्द्व पाते हैं। इसी कारण बच्चों की देखभाल, पति की देखभाल के कारण ये चिन्तित या कभी–कभी नौकरी छोड़ने का विचार रखती हैं।

- **पारिवारिक सामंजस्य**

कार्यरत महिलाएँ एवं उनके परिवारों का स्वरूप के बारे में अनेक अध्ययनों से यह प्रमाणित हो चुका है कि परिवार जैसी महत्वपूर्ण संस्था मतें स ंरचनात्मक परिवर्तन आया है एवं संयुक्त परिवारों की तुलना में एकाकी परिवारों की वृद्धि हुई है।लेकिन इसका तात्पर्य कदापि यह नहीं कि एकाकी परिवार में वृद्धि एवं महिलाओं के व्यवसाय अपनाने में कार्य कारण संबंध है। इस प्रवृत्ति के लिए विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं सामयिक कारण उत्तरदायी है। यद्यपि कार्यरत महिलाओं के परिवारों में ऐसी आन्तरिक स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है जो कि एकाकी परिवारों की उत्पत्ति को प्रेरित करती है। पारिवारिक संरचना में परिवर्तन आने का अनेक कारणों में से एक कारण महिलाओं का व्यवसाय में आना अवश्य है किन्तु एक मात्र कारण नहीं।

- **कामकाजी महिलाओं के अधिकार**

आजकल अधिकतर महिलाएं कहीं न कहीं काम करती है। वह घर के काम के साथ–साथ पैसा कमाने के लिए घर से बाहर भी कार्य करती है। कामकाजी महिलाओं के लिए हमारे संविधान ने कुछ अधिकार दिये है ताकि समाज में उनके साथ समानता का व्यवहार किया जा सके। काम करने वाली हर महिला या पुरुष को काम करने के लिए वेतन मिलना चाहिए। यह वेतन या तनख्वाह कम से कम उतनी होनी चाहिए। जितनी सरकार ने तय की हो। यानि न्यूनतम मजदूरी मिलनी चाहिए। बराबर के काम के लिए महिला को पुरुष के बराबर वेतन मिलना चाहिए महिलाओं को गर्भावस्था व प्रसूति से संबंधित कुछ खास अधिकार दिये गए है।

- **कार्यस्थल पर उत्पीड़न के खिलाफ कानून**

यौन उत्पीड़न अधिनियम के तहत हर महिला को वर्किंग प्लेस पर हुए यौन उत्पीड़न के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने का पूरा हक है। केन्द्र सरकार ने भी महिला कर्मचारियों के लिए नए अधिनियम लागू किये है। जिनके तहत वर्किंग प्लेस पर यौन शौषण के खिलाफ शिकायत दर्ज होने पर महिलाओं को जाँच लंबित रहने तक 90 दिन की पैड लीव दी जाएगी।

- **कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति**

विकास की प्रक्रिया में निःसंदेह महिलाओं के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। विश्व में आज बढ़ते विकास की प्रक्रिया को सतत् विकास के नाम से जाना जाता है। भारत में महिलाओं की स्थिति से संबंधी समिति का मानना है कि समाज के विकास में महिलाओं की भागीदारी तय करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, परिवार में स्थिति, सामुदायिक भागीदारी और वैश्विक समाज में महिला और पुरूष दोनों को समान रूप से देखे जाने की आवश्यकता है।

4. कामकाजी महिलाएं और उनकी समस्याएं

सामाजिक व्यबस्था बहुत कुछ आर्थिक ढांचा पर निर्भर करती है। मनुष्य की सारी चेतनाएं लगभग अर्थ पर टिकी होती हैं। आर्थिक रीढ़ कामकाजी महिलाएं और उनकी समस्याएं समाज और राष्ट्र की रीढ़ होती है। उसके वगैर अन्य चेतनाएं निस्तेज पड़ जाती हैं। 21वीं सदी भारी बदलाओं के दौर का साक्षी है। जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुआ हैं। परिवर्तन के इस दौर में दुनिया के सभी लोग विकास की आंधी में बहते नजर आ रहे हैं। तेजी से बदलते समय में ज्यादा से ज्यादा प्रतिक्रियाएं और ऑर्व्यवेषन ही हो सकते हैं। आधुनिकता बोध की प्रवृत्ति दन्द्वात्मक भौतिकवाद की चरम स्थिति है। आधुनिकता का ताल्लुक पूंजी और विज्ञान के विकास के साथ हैं, जो नगरीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रिया को तेज करता है।''

भारत में स्वतंत्रता के पष्चात कई परिवर्तनों का आगमन हुआ है। इनका प्रभाव पारिवारिक और सामाजिक जीवन पर भी पड़ा है। सरकार ने कई योजनाओं को लागू किया, जिनसे प्रगति का वातावरण सृष्ट हुआ। महिलाओं में षिक्षा का प्रचार हुआ, उन्हें अपने अधिकार का बोध हुआ। महिलाएं कई क्षेत्रों म अपनी हिस्सेदारी प्रकट करने लगीं। नारी स्वतंत्रता के उगते प्रभात में नई आषाओं का संचार हुआ । नारियों के अधिकार और कर्तव्य की व्याख्या होने लगी। नवजागरण की इस पुनीत वेला में अपने युग की अति महत्वपूर्ण मोग यह है कि नारी उत्कर्ष को समय की सबसे बड़ी मांग को आवष्यकता माना जाय । वगैर क्रांति और विद्रोह के समाज में बदलाव नहीं आया है। ''सामाजिक क्रांति समाज के विकास की निष्चित मंजिलों पर जीवन की भौतिक अवस्थाओं और आंतरिक अन्तर्विरोधों से उद्भूत होती है। विकास का एक खास मंजिल पर उत्पादक षक्तियां उत्पादन संबंधों से टकराने लगती हैं। इनकी टक्कर की सामाजिक क्रांति की वस्तुगत आर्थिक बुनियाद होती है।''

महिलाओं का कामकाजी होना भी क्रांति की एक बुनियाद है। स्त्री–पुरुष मिलकर यदि आर्थिक उपार्जन कर लेता है तो इससे परिवार ही नहीं देष के विकास की संभावना भी बढ जाती है। महिलाओं का कामकाजी होना कई बातों पर निर्भर है– पुरुषों द्वारा अनदेखी परिवार का आर्थिक बोझ तथा मान सम्मान की भावना इत्यादि। कामकाजी महिलाओं को घर और बाहर दोनों जिम्मेदारियों का निर्वाह करना पड़ता है। प्रायः देखा जाता है कि पति और उसके परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग सहज रूप में नहीं मिल पाता । पति भी अमानवीय व्यबहार करने से बाज नहीं आते। ऐसी स्थिति में मनोबल टूटना स्वाभाविक है। यहां तक कि दाम्पत्य संबंध में में भी कटुता आ जाती है। नोंक झोंक आम बात हो जाती है। इस दोहरी भूमिका में कामकाजी महिलाओं को मानसिक तनाओं से होकर गुजरना पड़ता हैं बाहर का काम, फिर घर का काम, बैलों की तरह जुतना हो जाता है। स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं की समस्याएं आम महिलाओं की अपेक्षा अधिक हैं– खासकर पुरूषों के साथ टकराहट बनी रहती है, स्त्री –पुरुष विषमता को भारत की सबसे बड़ी व गंभीर सामाजिक विफलता मानने वाले अर्थषास्त्री डॉ० अमर्त्यसेन की स्पष्ट निष्पत्ति है कि स्त्री मुक्ति और स्त्री – सषक्तिकरण केवल नारीवादी मुद्दा नहीं है, वल्कि वह सामाजिक प्रगति का एक अभिन्न अंग है। ''

5. निष्कर्ष

इस शोध से हम कह सकते हैं कि कई वर्षों तक महिलाओं को रसोई तक ही सीमित रखा गया। उन्हें पढ़ाई के लिए बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। उनके लिए घर ही दुनिया थी। अब समय बदल गया है। महिलाएं न केवल अपने लिए बल्कि लड़कियों के लिए भी उचित शिक्षा की मांग करती हैं। महिलाएं शिक्षित होकर विभिन्न कार्य क्षेत्रों में उच्च और सम्मानजनक पद प्राप्त करने में सफल होती हैं। भारत में महिलाएं शिक्षा, खेल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और राजनीति आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में पूरी तरह से भाग लेती हैं। गांवों और शहरों दोनों में कामकाजी महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। महिलाएं वह सब कर सकती हैं जो पुरुष कर सकते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से परिवार के सदस्यों के प्रति उनके दायित्वों और कार्यालय में कर्मचारी के रूप में उनके कर्तव्य के बीच संघर्ष अभी भी बना हुआ है। महिला व पुरूष दोनों ही पारिवारिक उत्तरदायित्वों के लिये सम्यक रूप से जिम्मेदार हैं। तथापि परम्परागत परिवेश में पले–बढ़े होने के कारण पारिवारिक उत्तरदायित्व महिलाएँ स्वयंमेव अपने ऊपर ले लेती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- खटरेजा, कंचन. (2023). कामकाजी महिलाओं के कार्य–जीवन संतुलन का अध्ययन. 83. 65–72.
- कुमारेशन, लक्ष्मण और मैरी, शिल्पा. (2023). बेंगलुरु शहर के संदर्भ में बीमा क्षेत्र में महिला कर्मचारियों के बीच कार्य–परिवार संघर्ष को प्रभावित करने वाले कारक. जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी. खंड. ग्ब्टप्, ,. 2023.
- काओ, चेन्यू और डुआन, हुई और एनजी, ली. (2023). उच्च शिक्षा में लैंगिक असमानता का महिला रोजगार पर प्रभाव. जर्नल ऑफ एजुकेशन, ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज. 8. 2355–2361. 10. 54097ध्मी.अ8प.4718.
- मार्केस–पेरलेस, इल्डेफोन्सो और मिगुएल, जुआन. (2023). स्पेन में सामाजिक गतिशीलता में कामकाजी महिलाओं की भूमिका. अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र. 38. 026858092211507. 10.1177ध्02685809221150753.
- बी, नाहिद. (2023). भारत में कामकाजी महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव.
- गरिमा, मिश्रा और किरण, यूवी. (2014). कामकाजी महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर वैवाहिक स्थिति का प्रभाव. जर्नल ऑफ मेडिकल साइंस एंड क्लिनिकल रिसर्च. 2. 2594–2605.
- सिंह, अन्नू और किरण, यूवी. (2014). किशोरों के व्यक्तित्व पर माँ की कामकाजी स्थिति का प्रभाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड साइंटिफिक एंड टेक्निकल रिसर्च. 4. 86–99.
- मेहराजन, तिरुवन्नामलाई और सुंदर, शालिनी और पल्लवी, सुश्री (2017)। करूर जिले के निजी कॉलेजों में कामकाजी महिलाओं के कार्य जीवन संतुलन पर एक अध्ययन।
- घनबारी, रोगयेह और सारूघानी, बाघेर और दाराबी, फतेमेह और बहरी, नरजेस और अबोलफाथी, मित्रा। (2017)। बच्चों के जीवन की गुणवत्ता पर महिलाओं के रोजगार का प्रभाव। अनुसंधान एवं स्वास्थ्य जर्नल. 7. 803–809.
- कालिदासन, मणिमेकलाई और गीता, वी. और पौलपुनिथा, डॉ. (2017)। कार्य जीवन संतुलनरू कामकाजी महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएं। 5. 2319–1899.
- दारजी, मित्तल। (2016)। 21वीं सदी में पेशेवर और सामाजिक जीवन को संतुलित करने में भारतीय कामकाजी महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ।
- हबीब, कामिला और शफीक, मुहम्मद और अफशान, गुल और कमर, फरिहा. (2019). महिला सशक्तिकरण पर शिक्षा और रोजगार का प्रभाव.